बालकनी

असगर वज़ाहत

अभी कुछ महीने पहले तक मैं एक दूसरे फ्लैट में रहता था। यह फ्लैट दूसरी मंज़िल पर था। इसकी एक बालकनी पार्क की तरफ थी। खाली वक्त में मैं इस बालकनी में बैठकर पेड़ों को देखा करता था। पेड़ों की कुछ शाखें बालकनी तक आती थीं। वैसे पेड़ बहुत ऊँचे थे। मुझे पेड़ों पर करवटें लेने वाली ज़िन्दगी दिखती। चिड़ियों-गिलहरियों की रोज़ की ज़िन्दगी काफी मज़ेदार लगती थी। पेड़ पर चिड़ियों के घोंसले थे।

कभी-कभी बन्दरों की एक टोली भी पता नहीं कहाँ से भूली-भटकी आ जाती थी। तब इन पेड़ों पर एक तरफ शोर मच जाता था। मैं समझने की कोशिश करता कि ये बन्दर कहाँ से आए होंगे। ये आवारा क्यों घूम रहे हैं? क्या इनका कोई घर नहीं है? अगर कोई घर है तो इन्हें वहाँ से किसने निकाल दिया है?

वैसे बन्दरों का जीवन कठिन था। इनको लोग अपने घरों से भगाते रहते थे। कोई भी इनको डण्डा लेकर खदेड़ देता था। कोई किधर तो कोई किधर। बन्दरिया भी गुस्से में खोख्याती थी।

जाड़ों की सर्द रात थी। बारिश हो रही थी। उन दिनों बन्दर बालकनी में आए हुए थे। रात में अचानक बालकनी से कुछ आवाज़ें आईं। मैंने उठकर बालकनी का दरवाज़ा खोला तो एक बन्दरिया उछलकर भागी। उसके पेट से उसका बच्चा चिपका हुआ था। दोनों बारिश में पूरी तरह भीग गए थे। पानी, हवा और सर्दी से बचने के लिए बन्दरिया अपने बच्चे को लेकर बालकनी में आ गई थी। मेरे दरवाज़ा खोलते ही वह उछलकर पेड़ पर चली गई और भीगने लगी।

एक दिन मैं बालकनी में बैठा हुआ था। यह एक खूबसूरत सुबह थी। सूरज की रोशनी पेड़ों के पत्तों से छनकर घास को किसी कलाकृति में बदल रही थी। मैंने देखा कि एक बिल्ला धीरे-धीरे बिलकुल चींटे की तरह पेड़ पर चढ़ने लगा है। उसकी तेज़ और चमकीली आँख चिड़ियों के घोंसले की ओर थी। उसकी पूरी कोशिश थी कि बगैर किसी तरह की आवाज़ किए वो घोंसले तक पहुँच जाए और चिड़ियों को चट कर जाए। मैंने सोचा मैं बिल्ले को ऐसा करने से रोकूँ। उसे चिड़ियों के अण्डे न खाने दूँ। अगर मैं चाहता तो बिल्ले को पेड़ पर चढ़ने से रोक सकता था। मुझे यह बात पसन्द नहीं आ रही थी कि बिल्ला गौरैया के अण्डे खा जाएगा। और गौरैया उदास हो जाएगी। लेकिन मुझे तो कहानी लिखनी थी। अगर बिल्ले को पेड़ पर चढ़ने से रोक देता तो क्या कहानी बनती?

बिल्ला बहुत धीरे-धीरे होशियारी से पेड़ पर चढ़ रहा था। जल्दी ही उसे चिड़ियों ने देख लिया। लेकिन चिड़िया कर क्या सकती थीं? बिल्ले के पास जातीं तो उनकी खैर न थी और बिल्ले को रोकने के लिए उसके पास तो जाना ही पड़ता।

चार-पाँच चिड़ियाँ बिल्ले के ऊपर चैं...चैं कर उड़ने लगीं। बिल्ले ने उनकी तरफ लापरवाही से देखा और धीरे-धीरे घोंसले की तरफ

चित्र : सुजाशा दासगुप्ता

बढ़ता रहा। चिड़ियों की आवाज़ सुनकर जल्द ही वहाँ और चिड़ियाँ आ गईं। अब बिल्ले के सिर के ऊपर दस-बारह चिड़ियाँ ऊँची आवाज़ में चैं-चैं करने लगीं। बिल्ले का आत्मविश्वास कुछ कम होने लगा। दूसरी तरफ चिड़ियों की तादाद और बढ़ गई। चैं-चैं की आवाज़ लगातार बढ़ने लगी। यकीन था कि बिल्ला ऊपर चढ़ता जाएगा। क्योंकि चिड़ियाँ सिर्फ शोर मचाकर उसे रोक नहीं पाएँगी। लेकिन बिल्ला बिना रुके ही मुड़ा। उसके चेहरे पर ऐसे भाव आए जैसे कोई बुरा काम करते पकड़ लिया गया हो। वह नीचे उतरने लगा और कहीं चला गया।

सर्दियाँ खत्म होने वाली थीं। सूरज का रंग बदलने लगा था। घास पर पड़ी ओस जल्दी गायब हो जाती थी।

अचानक एक दिन शोर मचा कि बन्दर आ गए... बन्दर आ गए। मैंने बालकनी से देखा। बन्दरों का वही परिवार था जो पहले भी आता रहा था। वही फिर आ धमका था। इस परिवार में एक मोटा-ताज़ा, कुछ डरावना-सा बन्दर था। एक बन्दरिया और उसके पेट से चिपका एक छोटा-सा बच्चा था। इनके साथ दो जवान बन्दर और थे। बन्दरों की इस टोली ने फ्लैटों की छतों पर अड्डा जमा दिया था। मौका पाकर कभी बन्दर फ्लैटों के अन्दर घुस आते और फ्रिज खोलकर खाना वगैरह निकाल लेते थे।

हमारे फ्लैट में कंचन नाम की एक लड़की काम करती थी। वह बंगाल के किसी गाँव से आई थी और ठीक से हिन्दी नहीं बोल पाती थी। मैं उसके साथ बंगाली बोलने की कोशिश किया करता। मेरा बंगला ज्ञान "तोमी" "अमार" तक सीमित था। लेकिन वह बंगाली लड़की मेरी हिम्मत बढ़ाने की हर कोशिश करती थी।

एक दिन कंचन रसोई में कुछ काम कर रही थी। वह बालकनी का दरवाज़ा बन्द करना भूल गई थी। हम लोग घर पर नहीं थे। अचानक मोटा वाला बन्दर फ्लैट के अन्दर आ गया और खाने की मेज़ पर बैठकर फल खाने लगा। कंचन ने पीछे मुड़कर देखा तो मोटा बन्दर अपने दाँत निकालकर गुर्राया। जैसे, कह रहा हो तुम अपना काम करो मुझे अपना काम करने दो। कंचन इतना डर गई थी कि काँपने लगी। बन्दर आराम से फल खाता रहा। उसके बाद अपने परिवार के लिए दो-चार फल लेकर चलता बना। कंचन की जान में जान आई।

इस घटना के बाद कंचन बन्दरों से डरने लगी थी। मैंने उसके लिए फ्लैट में एक डण्डा भी लाकर रख दिया था। सोचा ये था कि अगर कभी बन्दर आ गया तो कंचन के पास कुछ तो होना चाहिए।

एक दिन कंचन आई और बोली। मैं बन्दरों के बारे में गलत सोचती थी। ये बहुत अच्छे होते हैं।

कैसे? मैंने पूछा

आप जानते हैं बिल्ली ने बच्चे दिए है ना?

हाँ, जानता हूँ मैंने कहा।

वो बोली "मैं कपड़े डालने छत पर गई थी... वहाँ बिल्ली के बच्चे रो रहे थे... भूखे थे... बिल्ली उन्हें छोड़कर चली गई थी... तब... वहाँ बन्दरियाँ आ गईं और बिल्ली के बच्चों को अपना दूध पिलाने लगीं... ऐसा कौन करता है?"

मैं कंचन को देखने लगा। फिर बालकनी में चला गया कि शायद बन्दरियाँ दिखाई पड़ जाएँ।